शोध संगोष्ठी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सहरिया जनजाति देवलोक

27 फरवरी 2022

गालव सभागार, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद

समन्वय- इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

आयोजक- जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल

संगोष्ठी एवं समन्वयक

13 फरवरी 2022

कोल देवलोक

डॉ. नीलम चौरे

विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

27 फरवरी, 2022

सहरिया देवलोक

डॉ. हरेंद्र शर्मा

विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

06 मार्च 2022

बैगा देवलोक

प्रो. पी.के.सामल

अधिष्ठाता जनजातीय अध्ययन संकाय
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

डॉ.धर्मेन्द्र पारे
निदेशक
जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
म.प्र. संस्कृति परिषद, भोपाल
संगोष्ठी संपर्क - devlokmp@gmail.com

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462 002
E-mail: mptribalmuseum@gmail.com
web: www.mptribalmuseum.com, Phone: 0755 2661640, Fax: 2661948

संगोष्ठी

कोल, सहरिया, बैगा जनजाति का देवलोक

कोल देवलोक

13 फरवरी 2022
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

सहरिया देवलोक

27 फरवरी 2022
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

बैगा देवलोक

6 मार्च 2022
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक

कोल, सहरिया, बैगा जनजाति का देवलोक

कोल, सहरिया और बैगा जनजातियों के देवलोक पर होने जा रही यह संगोष्ठी कई अर्थों में विशिष्ट सिद्ध हो सकेगी। अभी तक देश विदेश में जनजातीय संस्कृति और कला के भौतिक और बाह्य पक्षों पर तो विचार विमर्श होता रहा है, किन्तु इस संस्कृति के आन्तरिक और अमूर्त तत्वों विशेष कर जनजातीय देवजगत पर अपेक्षाकृत कम ही विचार हुआ है। प्रत्येक जनजातीय व्यक्ति का मनोजगत अपनी प्राकृतिक शक्तियों, देवताओं, मातृदेवियों से बहुत गहरे में आबद्ध होता है। उसके इसी मनोजगत की अभिव्यक्ति हमें उनके नृत्य, चित्र, गान, और जीवन परंपरा में देखने को मिलती है। जनजातीय जीवन मनुष्य केन्द्रित कम सृष्टि केन्द्रित अधिक है। सृष्टि को बचाना आज वैश्विक चुनौती है।

जनजातीय देवलोक में अन्तर्निहित बोध को इस संगोष्ठी के माध्यम से विस्तार मिलेगा। आशा की जाना चाहिए कि प्रतिभागियों के माध्यम से इस देवजगत के सम्बन्ध में और भी बेहतर समझ विकसित हो सकेगी। साथ ही काल के प्रवाह में जो मूल्यवान विचार कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं उनको हम समकाल में समझ सकेंगे। जनजातियों के जीवन से देवलोक अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। उनका देवलोक धारणाओं की निर्मिति है। इन्हीं धारणाओं के सहारे समुदाय का जीवन व्यवहार संचालित होता आया है, जिनके कल्याणकारी पक्षों की ओर अब शेष विश्व भी एक आशा के साथ उन्मुख हो रहा है। यह संगोष्ठी नये मार्ग प्रशस्त करेगी ऐसा भरोसा किया जाना चाहिए। जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा अब तक कोरकू, गोंड, भील और भारिया जनजाति के देवलोक पर अध्ययन करवाया गया है। इस कड़ी में अभी कोल, सहरिया और बैगा जनजाति के देवलोक पर कार्य शेष है। इस दिशा में अध्ययन और सर्वेक्षण की संभावना को देखते हुए हमने तीनों ऐसे विश्वविद्यालयों में संगोष्ठी की रुपरेखा तैयार की है जिनके कार्यक्षेत्र में उक्त जनजातियों की बहुतायत है।

कोल, सहरिया और बैगा जनजाति के देवलोक पर अभी तक कोई शोधपरक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए हमने इन जनजातियों के देवलोक केन्द्रित एक-एक दिवसीय पृथक-पृथक संगोष्ठी की कल्पना की है। इस दिशा में सभी उत्सुक लोगों का हम आह्वान करते हैं कि वे इस विषय में अपना शोधालेख दिनाँक 31 जनवरी 2022 तक ई-मेल devlokmp@gmail.com पर प्रेषित कर दें। आलेखों के चयनोपरांत विद्वानों को आवास प्रवास और मानधन सहित आमंत्रित किया जा सकेगा। प्रकाशन योग्य होने पर इन आलेखों का अकादमी के प्रकाशनों में उपयोग भी किया जा सकेगा। संगोष्ठी संवाद के लिए निम्नलिखित बिन्दु प्रस्तावित हैं। यदि आपकी दृष्टि में देवलोक सम्बन्धी कोई अन्य बिन्दु भी है तो कृपया वह भी प्रेषित कीजिए। उपयुक्त प्राप्त होने की स्थिति में उसे भी शामिल किया जा सकेगा।

उद्भव की कथाएँ	–	ईश्वर, देवता, धरती, जीवन, वृक्ष-वनस्पति, जीव-जगत, नदी-पर्वत, चर-अचर सम्बन्धी
देवलोक	–	देवलोक सम्बन्धी विश्वास, प्रमुख देव एवं देवियाँ – उत्पत्ति आख्यान, शक्ति-सामर्थ्य, अस्त्र शस्त्र, परिधान, वाद्य, नृत्य-गीत, भोग-अर्पण, मेले और उत्सव, अवसर, आदि ।
व्रत-त्योहार, पर्व, अनुष्ठान, पूजन	–	धार्मिक अनुष्ठान, प्रमुख पूजन, विश्वास, कथाएँ, मान्यताएँ, तिथि, गीत, विधि-विधान ।
संस्कार	–	जन्म, विवाह, मृत्यु, अन्य संस्कार ।
शिल्प और कला	–	चित्र, गोदना, भित्ति एवं भूमि अलंकरण, प्रतीकात्मकता
विश्वास और मान्यताएँ	–	गोत्र एवं प्रतीक, चिकित्सा एवं उपचार, मंत्र

कोल, सहरिया और बैगा जनजाति का देवलोक

कोल, सहरिया और बैगा जनजाति के देवलोक पर एकाग्र एक–एक दिवसीय संगोष्ठी चित्रकूट (13 फरवरी 2022), ग्वालियर (27 फरवरी 2022) और अमरकंटक(06 मार्च 2022) को वहाँ स्थित विश्वविद्यालयों के समन्वय में जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी,म.प्र.संस्कृति परिषद,भोपाल द्वारा आयोजित । कृपया अपना आलेख आवश्यक रुप से 7 फरवरी 2022 तक प्रेषित कीजिए। आलेख भेजने के पूर्व आप विषय इत्यादि पर विचार विमर्श भी कर सकते हैं। वास्तविक क्षेत्रीय अध्ययन कर तैयार किये गये आलेखों को सर्व प्राथमिकता दी जायेगी। संगोष्ठी हेतु ई मेल devlokmp@gmail.com

sachinpippal@gmail.com Switch account

* Required

Email *

Your email

नाम *

Your answer

ई मेल *

Your answer

वॉटसएप नम्बर *

Your answer

व्यवसाय *

- [ ] प्राध्यापक - शिक्षक वर्ग
- [ ] शोधार्थी - स्वतंत्र अध्येता वर्ग

किस संगोष्ठी मेंआप प्रतिभागी होंगे ? *

- [ ] कोल (चित्रकूट में दिनाँक १३ फरवरी २०२२ को आयोजित)
- [ ] सहरिया (ग्वालियर में दिनाँक २७ फरवरी २०२२ को आयोजित)
- [ ] बैगा (अमरकंटक में दिनाँक ०६ मार्च को आयोजित)

आपका आलेख किस तारीख तक प्राप्त हो जायेगा ? *

Date

mm/dd/yyyy

आपके आलेख का विषय/शीर्षक ? *

Your answer

आपके शहर और प्रांत का नाम *

Your answer

क्या आपको आवास की आवश्यकता है ? *

- ◯ हाँ
- ◯ नहीं

कोई अन्य जानकारी जो आप देना चाहें –

Your answer

A copy of your responses will be emailed to the address you provided.

Page 1 of 1

Submit

Clear form

Never submit passwords through Google Forms.

reCAPTCHA
Privacy Terms

This content is neither created nor endorsed by Google. Report Abuse - Terms of Service - Privacy Policy

Google Forms